Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
1.2 VHP2
वृन्दावन दर्शन
CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
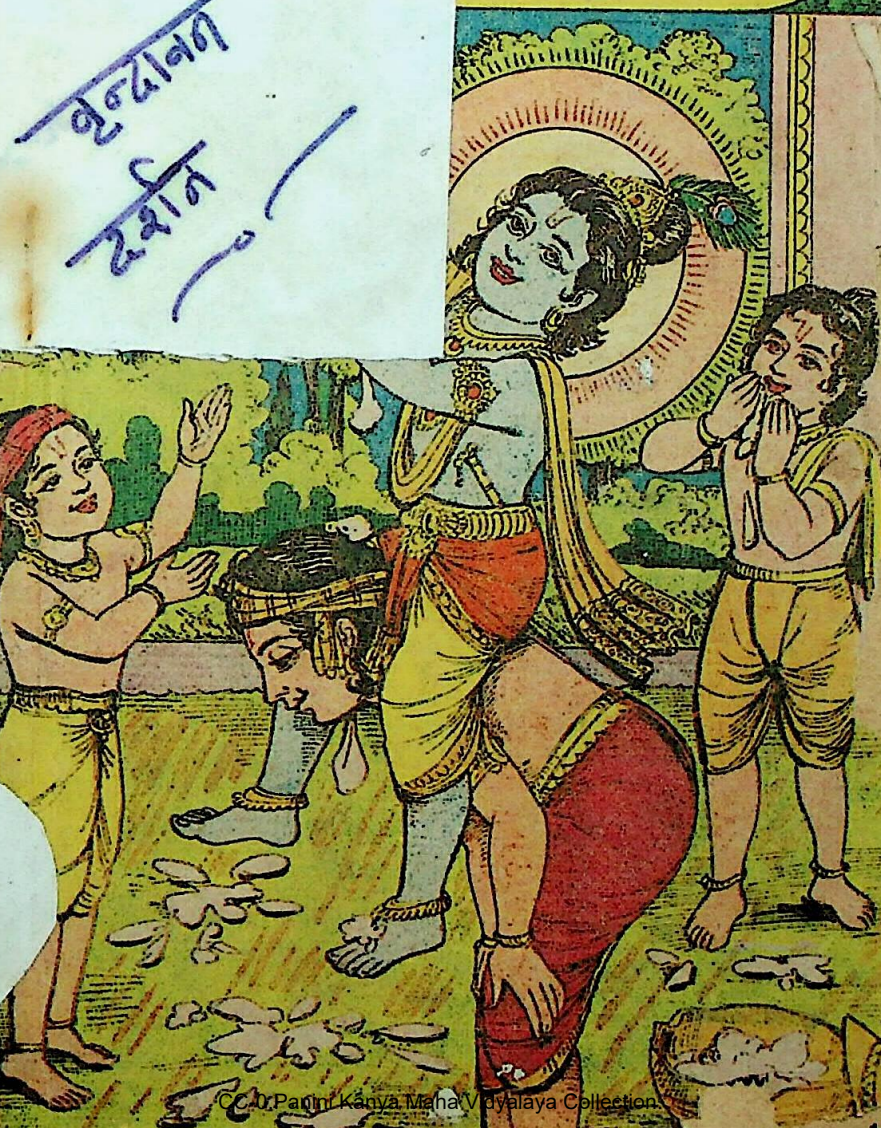
श्री गणेशाय नमः

# ❋ वृन्दावन दर्शन ❋

प्राचार्या
पाणिनि कन्या महाविद्यालय,
बजरडीहा, तुलसीपुर-वाराणसी

❋

लेखक—
**चैतन्य गोस्वामी**
राधारमण घेरा, वृन्दावन

❋
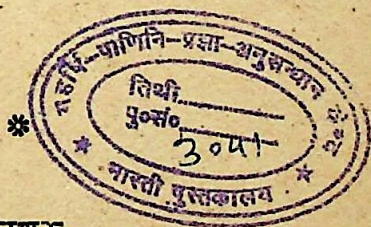
प्रकाशक—
**गोवर्धन पूजन भंडार**
**वृन्दावन**

सन् १९८३ } मुद्रक—शारदा प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा { मूल्य २.००

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3051

# ब्रज का हृदय वृन्दावन

श्री वृन्दावन धाम भगवान श्रीकृष्ण का परम पुनीत रम्य स्थल है, विश्व के अन्य स्थल ऐश्वर्य प्रधान हैं परन्तु माधुर्य प्रधानता के कारण भक्ति का केन्द्र श्री वृन्दावनधाम ही है,जहाँ आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा के साथ कृष्ण सर्वदा प्रेम लीलामय बने रहते हैं, सुन्दर झाड़ियों की सघनता, चिर पूजित गोवर्धन पहाड़ की गंभीर गुफाओं की गहनता तथा वृन्दावन की कल-कल बाहिनी कालिन्दी के कमनीय कूलको देख मानव हृदय प्रेम रस में विभोर हो राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का स्वाभाविक रूप से स्मरण करने लगता है, जाज्वल्यमान भव्य पच्चीकारियों से विभूषित विशाल मंदिर अनेक सौन्दर्य युक्त साधनों से मण्डित कुंजें जिनमें मत्त हो मयूरगण नृत्य करते रहते हैं, सघन कुञ्जों के ऊपर उड़ते हुए पक्षियों के पंखों का कोलाहल मानव हृदय को आंदोलित कर तथा स्वभाव को रसिक बनने के लिए विवश कर देता है, आश्चर्यमय लुभावने फूलों के ऊपर जब मकरन्द पान करने में उन्मत्त भ्रमरों की मनोहारी मृदुल मधुर ध्वनी सुन, स्वाभाविक रूप से मुख से निकल पड़ता है–

दोहा—ब्रज-समुद्र, मथुरा-कमल, वृन्दावन मकरन्द।
ब्रज बनिता सब पुष्प हैं, भँवरा श्रीब्रजचन्द ॥

यह वही वृन्दावनधाम है जिसकी रजमें निवास करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3041

# ब्रज का हृदय वृन्दावन

श्री वृन्दावन धाम भगवान श्रीकृष्ण का परम पुनीत रम्य स्थल है, विश्व के अन्य स्थल ऐश्वर्य प्रधान हैं परन्तु माधुर्य प्रधानता के कारण भक्ति का केन्द्र श्री वृन्दावनधाम ही है,जहाँ आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा के साथ कृष्ण सर्वदा प्रेम लीलामय बने रहते हैं. सुन्दर झाड़ियों की सघनता, चिर पूजित गोवर्धन पहाड़ की गंभीर गुफाओं की गहनता तथा वृन्दावन की कल-कल बाहिनी कालिन्दी के कमनीय कूलको देख मानव हृदय प्रेम रस में विभोर हो राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का स्वाभाविक रूप से स्मरण करने लगता है, जाज्वल्यमान भव्य पच्चीकारियों से विभूषित विशाल मंदिर अनेक सौन्दर्य युक्त साधनों से मण्डित कुंजें जिनमें मत्त हो मयूरगण नृत्य करते रहते हैं, सघन कुञ्जों के ऊपर उड़ते हुए पक्षियों के पंखों का कोलाहल मानव हृदय को आंदोलित कर तथा स्वभाव को रसिक बनने के लिए विवश कर देता है, आश्चर्यमय लुभावने फूलों के ऊपर जब मकरन्द पान करनें में उन्मत्त भ्रमरों की मनोहारी मृदुल मधुर ध्वनी सुन, स्वाभाविक रूप से मुख से निकल पड़ता है–

दोहा—ब्रज-समुद्र, मथुरा-कमल, वृन्दावन मकरन्द।
ब्रज बनिता सब पुष्प हैं, भँवरा श्रीब्रजचन्द ॥

यह वही वृन्दावनधाम है जिसकी रजमें निवास करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए बड़े-बड़े सन्तों ने, भक्तों ने, साहित्यकारों ने, कवियों ने प्रभू की याचना की है । प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों से तो यहाँ तक स्पष्ट है कि साक्षात ब्रह्मादि देवतागण इस धाम की रज लेने हेतु व्याकुल हो उठे । इस धाम के यश के बारे में यहाँ तक कहा गया है कि यदि कुवेर का धन प्राप्त हो जाये तो उसका क्या फल ? यदि वृहस्पति जैसी सुवाणी प्राप्त हो तो उससे क्या ? महेन्द्र के लोक का ऐश्वर्य मिले, तो उससे क्या लाभ ? कामदेव जैसा सुन्दर शरीर मिले तो क्या ? तपस्या योगादि की सिद्धि से क्या प्रयोजन ? क्योंकि श्री वृन्दावन धाम से जिस व्यक्ति की बुद्धि विमुख है उसी के लिए यह सब विडम्बना मात्र है, इस धाम के बारे में यही कहा जा सकता है । वृन्दावन सौन्दर्य से अनन्त है, माधुर्य पूर्णता में अनंत है, कृष्णभक्ति में अनन्त है, अपनी महिमा में अनंत है और इस धाम में रहने की जो नियत रखता है तथा इसे भजता है तो उसका भाग्य अनंत है ।

भाव से स्नान कर सरलता का जामा पहिन, नेत्रों में प्रेमाश्रु भर यदि आज भी कोई इस धाम के दर्शन करता है तो उसे कण-कण से भावमय भक्ति की ध्वनि सुनाई पड़ती है और वह वृन्दावन धाम के रहस्य सागर में डूब जाता है और अंत में मुख से यही निकलता है—

दोहा—श्री वृन्दावन धाम को, मरम न जानेकोय ।
डाल-डाल फल पात में, राधे-राधे होय ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आज जो वृन्दावन हम देख रहे हैं यह उसी प्राचीन वृन्दावन का परिवर्तित स्वरूप है। आज से ५०० वर्ष पूर्व भगवदावतार श्री चैतन्य महाप्रभु तथा श्री रूप, सनातन, गोपालभट्ट, हरिदास जैसे महान वैष्णवों की कृपा का फल है, उन्होंने अपने सतत प्रयास अनुभव द्वारा इस लुप्त धाम को भक्ति का प्रधान केन्द्र बना तथा भागवत धार्मिक प्रचार कर हमें वृन्दावन धाम से अवगत कराया, यह उन्हीं की महान कृपा का फल है। आज भी यहाँ घर-घर श्रीराधा कृष्ण के सात्विक प्रेम की चर्चा सुनाई देती है, प्रतिवर्ष लाखों यात्री श्रीराधा-कृष्ण की मंजुल मधुमयी कथाओं का गान करते हुए उनकी दिव्य मूर्तियों का दर्शन कर इसकी रज को अपने मस्तक पर चढ़ाने में अपना गौरव समझते हैं, आज भी यहाँ के भव्य मन्दिर भारत की प्राचीन संस्कृति का दिग्दर्शन कराते हैं, यहाँ पर श्रीमदन-मोहनजी एवं श्रीगोविन्दजी का मन्दिर जिनके ठाकुरों का प्रादुर्भाव क्रमशः सनातन एवं रूप गोस्वामियों की साधना द्वारा हुआ, यह दोनों मन्दिर वृन्दावन के प्राचीन तम मन्दिरों में आते हैं। इनकी पच्चीकारी, भव्य नक्कासी तथा मन्दिर की अद्भुत आकृति को देख मानव हृदय शंका करने लगता है कि "क्या यह मनुष्य की ही कृति हो सकती है?" राजसी वैभव की झलक प्रदान करता हुआ "शाहजी मन्दिर" भक्त शिरोमणियों में श्रीललितकिशोरी जी का नाम कौन नहीं जानता है? उन्हीं की साधना एवं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी अगाध भक्ति के फलस्वरूप इस मंदिर के ठाकुर का प्रादुर्भाव हुआ।

संगमरमर के भव्य टेढ़े खंभे, संगमरमर से ही निर्मित अद्भुत मन्दिर की आकृति तथा इस मन्दिर का विश्व-विख्यात बसन्ती कमरा, यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है, श्रीराधारमण का मन्दिर जिनके ठाकुर परम वैष्णव श्री गोपाल भट्ट की गोस्वामी साधना से प्रगट हुये,इसीप्रकार श्रीबांकेबिहारी जी का मन्दिर जिनके ठाकुर श्री स्वामी हरिदासजी की गंभीर साधना का फल है, आज यह ठाकुर वृन्दावन के गौरव बने हुए हैं। इन मन्दिरों के ठाकुरों का दर्शन कर यात्रीगण अपने नेत्रों के होने का फल प्राप्त करते हैं, पच्चीकारी, भव्य नक्कासी तथा विशाल इमारत के रूप में श्री रंगजी का मन्दिर जो श्रीरामानुज सम्प्रदाय से संचालित है एवं जयपुर वाला मंदिर इन दोनों मंदिरों को नहीं भुलाया जा सकता है। इन मन्दिरों की विशालता एवं कला को देख मनुष्य दंग रह जाता है।

प्राचीन वृन्दावन के दर्शनों का प्रतीक "निधिवन' है जोकि श्रीस्वामी हरिदासजी की साधना स्थली है। प्रतिवर्ष जिनकी समाधि पर संगीतमय भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये हिंदुस्तान के महान संगीतज्ञ आते हैं, क्योंकि श्रीस्वामी हरिदासजी, बैजूबाबरा, तानसेन के भी गुरु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। निधिवन की सघन लताओं को देख दर्शक का मन मुग्ध होजाता है, इसी प्रकार "सेवाकुञ्ज" जो श्रीराधा-कृष्ण की प्रमुख क्रीड़ा स्थल के नाम से तथा प्रेम के महा-भाव की जागृति का स्थल माना जाता है। इसमें निर्मित सघन कुंजें तथा झूलती हुई लतायें मानव के हृदयमें प्रेम-भक्ति के स्वरूप का बीजारोपड़ कर देती हैं। इस प्रकार वृन्दावन अपने में अद्भुत है, आजकल के समयानुसार सभी आधुनिक साधन भी वृन्दावन में विद्यमान हैं। जैसे ठहरने हेतु आलीशान धर्मशालायें, आधुनिकतम साधनों से युक्त ठहरने हेतु अतिथि भवन आदि। समस्त विश्व का पर्यटक केन्द्र होनें के कारण यहाँ लाखों यात्री नित्यप्रति आता है परन्तु यहाँ की स्वच्छता या सफाई को देख यात्रीगण आश्चर्य चकित हो जाते हैं, इस छोटे से नगर की सीमेंट की सड़कें सारे हिन्दुस्तान में विख्यात हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यदि देखें तो मौन्टसरी, प्राइमरी शिक्षा से लेकर पोस्ट-ग्रेजुएट तक की शिक्षा के साधन यहाँ सुलभ हैं।

सेवा का श्रोत इण्टरनेशनल संस्था, लायन्सक्लब भी यहाँ सुलभ हैं, जिनकी सेवाओं का लाभ वृन्दावन धाम बराबर प्राप्त कर रहा है, इसके अतिरिक्त जे० सी० क्लब भी अस्तित्व में आ चुका है। अन्य संस्थायें भी यहाँ पर हैं। जोकि समय-समय पर धार्मिक एवं सामाजिक कृत्य करती रहती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अन्त में यही कहा जा सकता है वृन्दावन की महिमा जो प्राचीन काल से लेकर आज की तारीख तक गाई जा रही है वास्तव में हृदयस्पर्शी है, सभी यात्रीगण समस्त विश्व का भ्रमण कर जब वृन्दावन की भूमि में आते हैं तो कहते हैं जो सुख, शान्ति एवं सात्विक, सरल भक्ति का दर्शन हमें यहाँ प्राप्त हुआ है वो अन्य कहीं नहीं। समस्त ब्रज में भ्रमण करने के पश्चात् यात्रा जब शान्त चित्त से मनन करता है तो बार-बार यही कहता है कि यदि समस्त ब्रज 'रसपुञ्ज' है तो उसका रास-केन्द्र या हृदय वृन्दावन ही है।

—लेखक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वृन्दावन दर्शन

## श्रीबाँकेबिहारीजी का मन्दिर

श्री स्वामी हरिदास जी की उपासना-स्थली श्रीनिधि-वन से प्रगटित श्री बाँकेविहारी जी के श्री विग्रह की पूजा के लिए जिस भव्य भवन का निर्माण हुआ वह श्री बाँके-बिहारी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर का प्रवेश द्वार सुन्दर पच्चीकारी एवं कलात्मतासे मंडित है। द्वारपर दोनों ओर सुन्दर बड़े बड़े चबूतरेतिवारी सहित एवं द्वितीय मंजिल पर भी छोटी-छोटी दोनों ओर तिवारियाँ जिसके मध्य मह-

राव दार प्रवेश द्वार बहुत सुन्दर लगता है, प्रवेश द्वार से अंदर प्रवेश पाते ही विशाल जगमोहन संगमरमर का है। जहाँ खड़े होकर हजारों आदमी दर्शनों का लाभ लेते हैं। गर्भ-मंदिर में विराजित प्रतिमा श्री बाँकेविहारीजी की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांती में अद्वितीय, अपूर्व सौन्दर्य मयी है। कृष्ण वर्ण की यह प्रतिमा अपने चमचमाते नेत्रों से हजारों दर्शनार्थियों के मन को मोह लेती है। इस मन्दिर की सेवा, दर्शन अन्य मन्दिरों से बिलकुल अलग है, ठाकुर की आरती के समय अन्य मंदिरों की तरह यहाँ पर घंटा-घड़ियाल आदि नहीं बजाये जाते हैं और अन्य मंदिरों की भाँति यहाँ पर नित्य मंगला आरती भी नहीं होती है। इस मन्दिरमें सभी कार्य विशेष रूप से एक दिन ही होते हैं, जैसे यहाँ पर एक दिन चरण-दर्शन होते हैं, एक दिन मुकुट, वंशी एवं कटि-काछनी धारण होती है, एक दिन झूलन होता है तथा एक दिन ही मंगला आरती होती हैं। झूलनों के दिनों में एक दिन सोने के झूला पर ठाकुर विराजमान होकर झूलते हैं, यह स्वर्ण का बहुत ही भव्य एवं विशाल झूला है, इस झूला की भव्यता को देखनें लाखों लोग दूर-दूर से आते हैं, गर्मियों के दिनों में संध्या को नित्य प्रति यहाँ फूलों का श्रृंगार होता है एवं बँगला बनता है। यह बहुत ही प्राचीन दर्शनीय एवं पूज्यनीय मन्दिर है।

## श्री गोपीश्वर महादेव

भारत में महादेवों में जैसे भूतेश्वर, रंगेश्वर, मनकामेश्वर आदि प्रसिद्ध हैं इसी प्रकार गोपीश्वर महादेव का मंदिर भी प्रमुख है। यह मन्दिर वृन्दावन में वंशीवट के पास स्थित है। श्रीमद्भागवत में कथा है कि महारास के समय श्रीमहादेवजी नें गोपी का रूप धारण करके श्री कृष्ण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के महारास का रसास्वादन किया था। श्रीमहादेवजी का वही गोपी रूप वृन्दावन धाम में पूज्यनीय है, वृन्दावन का यह बहुत ही प्रसिद्ध एवं प्राचीन मन्दिर है, फाल्गुन मास की शिव चतुर्दशी के दिन इस मन्दिर में एक बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है तथा विवाह एवं पुत्र प्राप्ति के उपलक्ष में भक्त लोग इस दिन मन्दिर में जेहर चढ़ाते हैं। विशुद्ध यमुना जल की गगरिया को लेकर नारियाँ अपनी सहेलियों एवं स्वजनों के साथ गायन करती हुईं शिव चतुर्दशी के दिन जल चढ़ाने हेतु जाती हैं एवं बड़े ही भक्ति भाव से भगवान शंकर का पूजन करती हैं।

## पागल बाबा का मन्दिर

वृन्दावन के नवनिर्मित मन्दिरों में पागल बाबा का
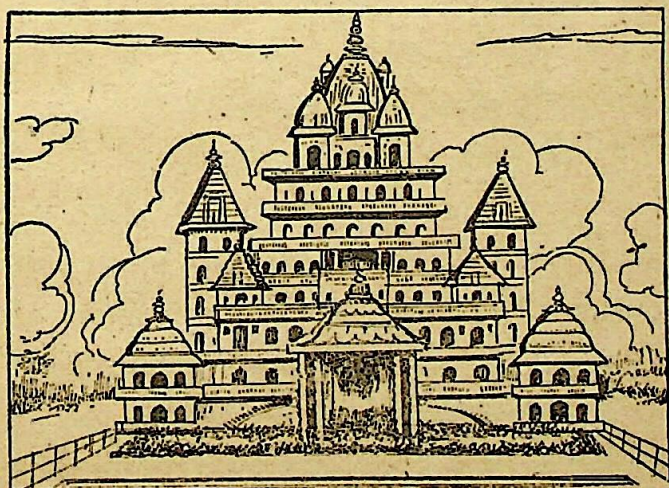
मंन्दिर भी बहुत प्रसिद्ध है। सन् १९७३-७४ से इस मंदिर का निर्माण कार्य लगातार हो रहा है, अब केवल संगमर-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मर लगने का कुछ कार्य शेष रह गया है जोकि शीघ्र ही पूर्ण हो जावेगा। इस मन्दिर का निर्माण आसाम की तरफ के एक बंगाली वैष्णव जोकि हिन्दुस्तान में पागल बाबा के नाम से प्रसिद्ध हैं उन्हीं ने इस मन्दिर का निर्माण कराया है। मन्दिर के साथ-साथ बाबा के भी दर्शन करने हेतु हिंदुस्तान के कौने-कौने से लोग आते हैं, बाबा बहुत चमत्कारी माने जाते हैं, इसके साथ-साथ पागल बाबा श्रीराधा-कृष्ण के अनन्य भक्त हैं। पागल बाबा का यह भव्य मन्दिर मथुरा-वृन्दावन सड़क पर स्थित है। इसका भव्य विशाल प्रवेशद्वार है जिसके अन्दर प्रवेश पाते ही मध्य में विशाल तालाब है, बाँयी ओर दुकानें हैं, चारों ओर सुन्दर बगीचा है, यह सब बेहुत बड़े घेरे में स्थित है, सामने खड़े होकर मन्दिर के भव्य दर्शन होते हैं। संगमरमर से निर्मित नौ मंजिल का यह मन्दिर दर्शन करने वालों को मोहित कर लेता है, सुर्री युक्त महरावदार अट्टालिकायें नौ, मंजिल तक मन्दिर की शोभा को बढ़ाये हुए हैं। मन्दिर के मध्य में श्रीराधा-कृष्ण की भव्य मोहिनी सुन्दर प्रतिमा स्थित है, वैसे प्रत्येक मंजिल में चारों ओर सभी देवताओं की मूर्तियों के दर्शन सुलभ हैं। यह इस मंदिर की विशेषता है।

## श्री गोविन्ददेवजी का मन्दिर

उत्तर भारत के प्रसिद्ध मन्दिरों में श्रीगोविंददेवजी के मन्दिर से कौन परिचित नहीं है। ब्रजभक्ति के महान प्रेरक महान साधक तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनन्य भक्त रूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी की प्रेरणा से जयपुर के तत्कालीन महाराजा मानसिंह जी ने इस मंदिर का निर्माण सम्वत १६४७ में करवाया था। इस मंदिर के ठाकुर श्रीगोविंददेवजी का विग्रह अति ललित एवं माधुर्य से पूर्ण त्रिभंग विग्रह है जो परम भक्त श्रीरूप गोस्वामीजी की भक्ति प्रेरणा से प्रकट हुआ था ऐसा कहा जाता है कि श्रीरूप गोस्वामीजी की यह प्रतिमा गोमा-टीले से प्राप्त हुई थी जिसे औरंगजेब के भय
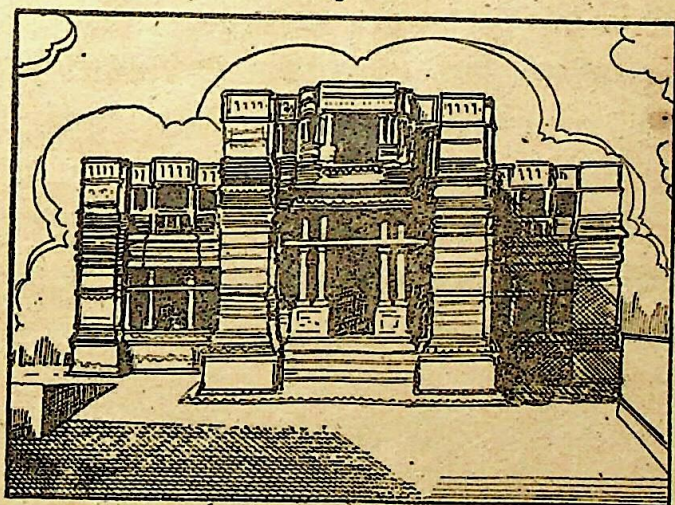
से जयपुर पहुँचा दिया गया था। लगभग सम्वत् १८०५ में इस मन्दिर में गोविंददेवजी का प्रतिभू विग्रह स्थापित कर नियमित सेवा प्रारम्भ कर दी गई। वृन्दावन के प्राचीन मंदिरों में ही श्रीगोविंददेवजी का मन्दिर माना जाता है। लाल पत्थर से निर्मित यह भव्य मंदिर प्रत्येक दर्शक का मन मोह लेता है, समतल स्थान से दृष्टिपात करने पर इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भव्य-भवन की ऊँची कुर्सी दोनों ओर लगभग १५फीट मोटी दीवारों के भव्यद्वार एवं मोटे-मोटे स्तम्भ तथा चारों ओर छत्री नुमा कला-कृतियों से घिरे महराव, सामने की ओर छोटासा प्रवेश द्वार एवं उसके अन्दर विशाल जगमोहन, सभा मण्डप तथा उसके गर्भ में कुछ सीढ़ियों के ऊपर कुर्सी-नुमा पुनः चारदीवारी से घिरा कला-कृतियों से सुसम्पन्न गर्भ-मन्दिर दर्शक का मन मोह लेता है। भारत में गोविंद-देवजी का मन्दिर अपनी तरह का अद्भुत, अद्वितीय बनावट का अकेला मन्दिर है। वृन्दावन का अधिकांश भूभाग इसी मन्दिर की सम्पत्ति है, वृन्दावन को इस प्राचीन एवं अद्वितीय ढंग से निर्मित इस मन्दिर पर गर्व है। इस मंदिर की सेवा-विधि गौड़िय सम्प्रदाय के अनुसार होती है। बंगाली गोस्वामी यहाँ के अधिकारी हैं। वही लोग सेवा, निष्ठा से इसकी देख-रेख एवं ठाकुर की सेवा सम्पन्न करते हैं।

## श्री रंग मन्दिर

वृन्दावन के पूरब की ओर श्रीरंगनाथजी का भव्य मन्दिर है, इस वैभवशाली मन्दिर को रामानुज सम्प्रदायानुयायी भक्त सेठ श्रीराधाकृष्णजी एवं सेठ गोविन्ददासजी पारीख द्वारा संवत् १९०८ के लगभग बनवाया गया था। कहा जाता है कि इसके निर्माण में करीब ४५ लक्ष मुद्रायें व्यय हुईं दक्षिण की शैली पर निर्मित यह विशाल मन्दिर बड़े भू-भाग को बहुत ही व्यवस्थित ढंग से संजोये हुये है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसमें सात बड़ी-बड़ी परिक्रमायें हैं जो चारों ओर ऊंचे परकोटों से घिरी हुई हैं, जिसके सात ही द्वार हैं अन्त में
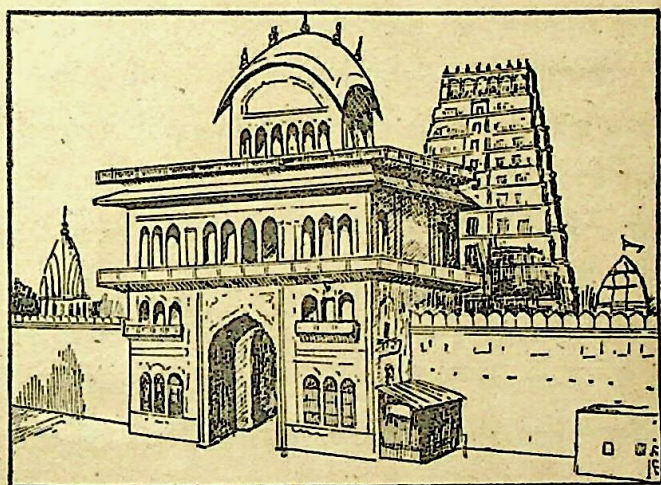
मध्य में विशाल आंगन है जिसके समक्ष कुछ सीढ़ियां चढ़कर जगमोहन है, जिसमें गर्भ-मन्दिर स्थित है, अन्तिम द्वार के ठीक सामने अतिन्म परकोटे के करीब ६० फीट ऊँचा विशाल सोने का गरुड़ स्तम्भ है, द्वार से बाहर के परकोटे में एक विशाल दर्शनीय तालाब है। इस तालाब में भाद्र-मास में गज-ग्राह के युद्ध की पौराणिक कथा को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इस मंदिर में श्रीरंगनाथजी, श्रीलक्ष्मीजी एवं श्रीगरुड़जी की प्रतिमायें हैं जिनकी सेवा रामानुज सम्प्रदाय पद्धति से सम्पन्न होती है, यह मन्दिर विशालता एवं दक्षिण की कला शैली के कारण बहुत प्रसिद्ध है। इस मन्दिर का प्रमुख उत्सव चैत्र मास में होता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ज़िसे ब्रह्मोत्सव कहते हैं। यह १० दिन तक चलता है, प्रत्येक दिन श्री रंगनाथजी की विभिन्न स्वर्ण वाहनों पर सवारी निकलती है जो कि खास-मन्दिर से रंगजी के बगीचे तक बाजे-गाजे, कीर्तन मण्डलियों के साथ जाती है एवं कुछ विश्राम कर पुनः वापस होती है, आतिशबाजी, फब्बारों की शोभा का कार्यक्रम भी इस ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत सम्पन्न किया जाता है। परिक्रमाओं के परकोटे के अन्दर ही समस्त सेवा अधिकारियों, पुजारियों के निवास ग्रह बने हुए हैं, यह सब दक्षिणी संस्कृति से युक्त हैं। इस मन्दिर का स्वामित्व सेठों का है परन्तु इनके गुरु रंगाचार्यजी थे उन्हीं को यह भेंट किया गया। परन्तु सम्वत १९२२ में श्री रंगाचार्यजी ने एक ट्रस्ट बनाकर समस्त प्रबन्ध व्यवस्था उसको सौंपदी जो आज तक व्यवस्था करता चला आ रहा है।

## लाला बाबू का मन्दिर

मुर्शिदाबाद निवासी बाबू मुरली मोहनजी की कुल परम्परा में बाबू कृष्णचन्द्रसिंह का जन्म हुआ जो कि ब्रज मण्डल में लाल बाबू के नाम से प्रसिद्ध हुये। उन्हीं के नाम पर मंदिर का नाम भी लाला बाबू का मन्दिर पड़ा। रंगजी के मंदिर से पश्चिम की ओर यह मन्दिर स्थित है इसका निर्माण लगभग सम्वत् १८६७ में हुआ था यह मन्दिर करीब १६० फीट लम्बे भू-भाग में स्थित है। मन्दिर का विशाल आँगन, बड़े-बड़े चबूतरे चारों ओर फुलवारी मंदिर के ऊपरी भाग पर वृहद् सुर्री इस मंदिर की अपनी विशेषता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्दावन धाम में यह मंदिर बंगाली संस्कृति का प्रतीक है। इस मंदिर की व्यवस्था के लिये श्री लाला बाबू ने बहुत बड़ी जमींदारी प्रदान की थी जिसकी आय से मन्दिर का व्यय होता है। कहा जाता है कि स्वयं लाला बाबू ब्रज में रहते थे और इतने विरक्त भाव से निवास करते थे कि केवल कुछ ब्रजवासियों के घर पर भिक्षा वृत्ति करके ही अपने भोजन की व्यवस्था किया करते थे। साधुता, दान-शीलता, दयालुता, उदारता आपके गुण थे। वृन्दावन की भूमि का ही यह महत्व है कि इसने ऐसे ऐसे करोड़पति अपनी गोद में साधु बनाकर धारण किये। धन्य है यह भूमि एवं इससे भी अधिक धन्य वे लोग हैं जो इसमें वास करते हैं।

भाग बड़ौ वृन्दावन पायौ।
जा रह को सुर नर मुनि वांछित, विधि से कर सिर नायौ॥

## श्री ब्रह्मचारीजी का मन्दिर

कहा जाता है कि ग्वालियर के महाराज जीवाजीराव सिंधिया के द्वारा प्रदत्त ५ लाख मुद्राओं से इस मन्दिर का निर्माण हुआ, मन्दिर के सेवाधिकारी निम्बार्क-सम्प्रदाय के आचार्य श्रीगिरधारी शरण देव थे, जो महाराज के गुरु थे, इस मन्दिर के ठाकुर का नाम श्रीराधागोपालजी महाराज है। यह मन्दिर "गोपालजी का मन्दिर" के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस मन्दिर की पत्थरतरासी देखने योग्य है। विशाल प्रवेश द्वार, दाँयी-बाँयी ओर बड़े-बड़े तिवारे प्रवेश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वार पर दोनों ओर भव्य चबूतरे, चौड़ी-चौड़ी सीढ़ियां, प्रवेश द्वार से अन्दर की ओर विशाल भव्य चार दीवारी से घिरी परिक्रमा, बीच-बीच में फुलवारियों का दर्शन थोड़ा आगे बढ़ने पर पुनः एक छोटा-सा द्वार जोकि अत्यन्त कलात्मक एवं सुन्दर पच्चीकारी से युक्त है उसमें प्रवेश पाते ही पुनः बड़ा जगमोहन अन्तमें मध्यस्थ श्रीराधा गोपालजी का गर्भ-मन्दिर निहित है। इस मन्दिर में प्रवेश पाते ही निम्बार्क सम्प्रदाय के पाँच प्रमुख आचार्यों की प्रतिमायें श्रीहंस, श्रीसनक, श्रीनारद, श्रीनिम्बार्क एवं श्रीनिवास की दर्शनार्थं प्राप्त हैं। इस प्रकार यह मन्दिर अपने में अनौखा तथा निम्बार्क सम्प्रदाय का पूर्ण द्योतक है।

## श्री टिकारी रानी का मन्दिर

टिकारी की महारानी कुँवरि इन्द्रजीत ने इस भव्य मन्दिर का निर्माण सम्वत् १९२७ में करवाया था। सुन्दर यमुना के किनारे यह मन्दिर स्थित है, सामने ही पक्का घाट है जो संवत् १९४० में महारानी विद्यावती कुँवरि ने बनवाया था, इस मन्दिर का शिलान्यास निम्बार्काचार्य श्री गोपीश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज ने किया था। इस मन्दिर का भव्य प्रवेश द्वार जो कि द्वि मन्दिर अटारियों से विभूषित है। द्वार पर सुन्दर शिल्प-सौन्दर्य, द्वार के अन्दर विशाल आंगन एवं गर्भ मन्दिर देखने योग्य हैं, यमुना के किनारे स्थित होने के कारण मन्दिर की शोभा में चार-चांद लग गये हैं, वृन्दावन की परिक्रमा आदि के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वों पर इस मंदिर में विभिन्न प्रकार की सजावट होती है एवं पर्याप्त दर्शनार्थी दर्शन के लिये आते हैं। यह मंदिर "टिकारी वाली रानी का मंदिर" के नाम से तथा इसके सामने जो घाट है वह "टिकारी वाला घाट" के नाम से जाना जाता है।

## श्री गोपीनाथजी का मन्दिर

वृन्दावन के प्राचीन मंदिरों में तथा औरंगजेब ने जिन मंदिर को ध्वस्त करने का प्रयास किया था उन मंदिरों में गोपीनाथ मंदिर का नाम भी आता है, गौड़ीय सम्प्रदाय के गोस्वामी श्रीमधुजी महाराज के निर्देशानुसार इस मदिर का निर्माण हुआ था। कहा जाता है कि वृन्दावन में स्थित वंशीवट स्थानके एक वट-वृक्षके मूलमें यह प्रतिमा गोस्वामी जी को प्राप्त हुई थी, पहले इस प्रतिमा को अभिषेक आदि कर वंशीवट में ही रख लिया गया। बाद में सम्वत् १६४६ के लगभग लाल पत्थर का यह विशाल मंदिर बनवाया गया। औरंगजेब के शासनकाल में सुरक्षा के लिये प्रतिमा को जयपुर ले जाया गया। बाद में इस प्रतिमा को एक प्राचीन मंदिर में विराजमान कराया गया। उसके पश्चात नव निर्मित मंदिर में ठाकुर को लाया गया। इस मंदिर का विशाल प्रवेश द्वार है उसके अंदर प्रवेश पाने पर दोनों ओर यहाँ के कर्मचारियों एवं गोस्वामी जी के रहने के स्थान बने हैं। पुनः एक छोटा द्वार उसके अन्दर प्रवेश पाने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पर इस मन्दिर की परिक्रमा प्रारम्भ होती है। फिर दाहिनी ओर श्री गोपीनाथजी का प्राचीन मन्दिर आता है, बाँयी ओर नवीन मन्दिर का द्वार है, अन्दर प्रवेश करते ही विशाल आँगन है फिर सीढ़ियों पर चढ़कर पुनः छोटा आँगन फिर मध्य में गर्भ-मन्दिर स्थित है जिसमें श्री गोपीनाथजी विराजमान हैं। गौड़िय सम्प्रदाय के गोपीनाथजी के मन्दिर की बहुत अधिक मान्यता है विशेष कर बंगाली लोगों का यहाँ पर दर्शन हेतु दूर-दूर से बराबर आगमन होता रहता है।

## श्री षड्भुज महाप्रभु का मन्दिर

वृन्दावन में श्रीचैतन्य महाप्रभु के प्राचीन मंदिरों में सर्व प्रथम श्री षड्भुज महाप्रभु मन्दिर का नाम ही आता है, सन् १६१८ के करीब नौका द्वारा इस मूर्ति को बंगाल से वृन्दावन लाया गया उसके पश्चात माध्व सम्प्रदाय के गोस्वामी श्री गुण मंजरीदास जी (गल्लूजी महाराज) इस विग्रह को अपने स्थान में ले आये तभी से माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय की पद्धति से नियमित रूप से इसकी सेवा-पूजा चलने लगी। इसके पश्चात श्री राधाचरण गोस्वामी विद्यावागीशजी ने इस ठाकुर को लाड़लड़ाया, अब वर्तमान में उन्हीं के पौत्र श्रीअद्वैतचरण गोस्वामी नियमित रूप से उत्साह उमंग से इनकी सेवा-पूजा में रत हैं। षड्भुज महाप्रभु इस विग्रह का नाम इसलिये है कि इसके छैः भुजा हैं, यह वह दर्शन है जो नवद्वीप में चैतन्य महाप्रभु ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अपने विद्वान एवं तार्तिक भक्त श्रीसार्वभौम भट्टाचार्य को
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो रूप दिखाया था आपने सार्वशौम भट्टाचार्य जी को दर्शाया कि मैं ही कृष्ण हूँ, मैं ही राम हूँ, एवं मैं ही चैतन्य महाप्रभु हूँ। अतः इस विग्रह में सबसे ऊपर के हाथ राम के द्योतक हैं, मध्य में श्रीकृष्ण के हाथ मुरली बजाते हुये नीचे चैतन्य महाप्रभु के दण्ड, कमण्डल धारण किये हुये हैं। अतः षड्भुज महाप्रभु की मूर्ति में तीनों रूप विद्यमान हैं, श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं श्रीगौरांग देव। चौंसठ महन्त का उत्सव इस मंदिर की अपनी एक विशेषता है जोकि आषाढ़ माह में यह उत्सव सम्पन्न किया जाता है, इस मंदिर में बंगाली दर्शनार्थियों का ताँता बंधा रहता है, माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय का यह प्रमुख मंदिर है, श्री राधारमण जी मंदिर के निकट यह प्राचीन मंदिर स्थित है।

## श्री राधारमणजी का मन्दिर

श्री वृन्दावन धाम के प्राकट्य विग्रहों में श्रीराधा-रमणजी का नाम भी उल्लेखनीय है,माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय से सम्बन्धित यह प्राचीन मंदिर वृन्दावन के प्रमुख मंदिर में गिना जाता है। इस मंदिर में श्रीगोपालभट् गोस्वामीजो के उपास्य विग्रह बिराजमान है। पहले यह विग्रह शालग्राम शिला के रूप में था। श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी जी की गुरुभक्ति, सेवा एवं अगाध भक्ति के फलस्वरूप शालग्राम शिला अद्भुत सौन्दर्यमयी लघुकाय प्रतिमा के रूप में परिवर्तित हो गई इसका प्रथम अभिषेक उत्सव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७९९ में मनाया गया था। श्री राधारमणजी के साथ श्रीराधाजी की मुकुट सेवा है, शालग्राम शिला से प्रगटित इस विग्रह की सेवा पूजा श्री राधारमणजी के समस्त गोस्वामी लोग बड़े ही हाव-भाव से आजतक करते चले आ रहे हैं, जहाँ तक मंदिर का प्रश्न है गोस्वामियों के मकान सहित विशाल घेरा है. जिसका वृहद् प्रवेश द्वार है पर्याप्त अन्दर जाकर मंदिर का द्वार है उसके अन्दर प्रवेश पाते ही विशाल भव्य आंगन है फिर कुछ ऊंचाई पर एक ओर छोटा जगमोहन है वहीं पर मध्य में श्रीराधारमण देव का गर्भ-मंदिर स्थित है श्रीराधारमण देव की यह छोटीसी प्रतिमा सारे विश्व में अपने सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है। जन्माष्टमी के दिन प्रातःकालीन खुला अभिषेक इस मंदिर की अपनी एक अद्भुत परम्परा है जो कि देखने योग्य है इसी प्रकार श्रीराधारमण के जन्म उत्सव पर जन्म पूनों पर भी प्रातःकालीन अभिषेक होता है। मंदिर के समीप ही श्री राधारमण जी का प्राकट्य स्थल है जिसके समीप श्री गोपाल भट्ट गोस्वामीजी की समाधि एवं अन्य सभी गोस्वामियों की समाधि बनी हुई हैं, इस मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर एक विशाल रास-मण्डल भी बना हुआ है। वृन्दावन के पांच भगवद् विग्रहों में से श्री राधारमण जी एक हैं।

## श्री शाह जी का मन्दिर

श्री मन्माध्व गौड़िया सम्प्रदाय की सेवा पूजा पद्धति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से संचालित शाह कुन्दनलाल द्वारा बनवाया यह मंदिर देश-विदेश में प्रसिद्धि पा चुका है। शाहजी साहिब ने लगभग सं० १९२५ में करीब दस लाख रुपये व्यय करके इस मंदिर का निर्माण करवाया था, इस मंदिर का वास्तविक नाम "ललित निकुञ्ज' है संगमरमर का यह अद्भुत भव्य मंदिर अपनी कलाकृति एवं टेढ़े खम्भों के कारण संसार में प्रसिद्ध है, राधा-कृष्ण की सुन्दर मूर्ति इस भव्य मंदिर में
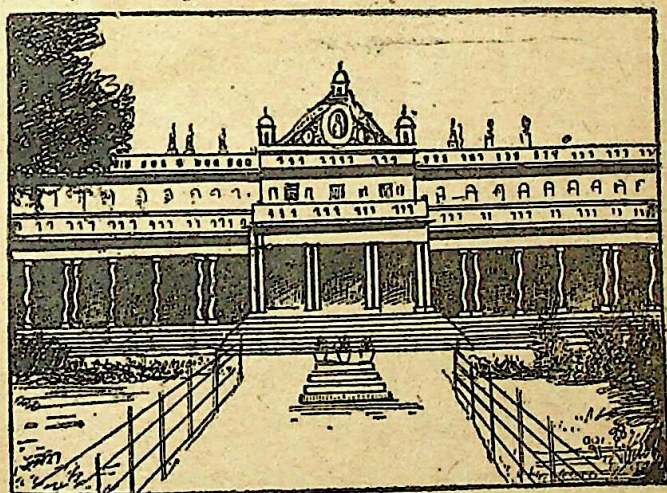
विराजमान है जिनका नाम श्री राधारमण लाल है। इस मंदिर का विशाल प्रवेश द्वार देखते ही बनता है, द्वार से प्रवेश पाते ही अति सुन्दर विशाल बगीचा, दोनों ओर मेंहदी की कतारें, मध्य में रंग बिरंगे पुष्प जिनके मध्य में फब्बारा, फब्बारे के समीप सुन्दर पुष्पों के मध्य जब दर्शनार्थी अपने को पाता है तो वह शांती एवं सुख का अनुभव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने लगता है सोचता है पृथ्वी पर नन्दन-वन कहाँ से आगया। सामने ही भव्य विशाल संगमरमर का मंदिर है जिसके दोनों ओर फब्बारे हैं तथा मंदिर के मुख्य द्वार के दोनों ओर बल खाते संगमरमर के टेढ़े खम्भे मन्दिर की सौन्दर्यंता एवं कलाकृति में चार चाँद लगा देते हैं। मंदिर के ऊपरी भाग पर दुग्ध के समान भव्य श्वेत कलाकृति से मण्डित संगमरमर की विशाल मंदिर नुमा सुर्री जिन पर मछलियों का आकार निर्मित किया हुआ है इसके दोनों ओर विभिन्न रास-मुद्राओं में नृत्य करती हुईं कलात्मक ढंग से निर्मित सखियां मंदिर की शोभा को चौगुना कर देती हैं। ऐसा लगता है मानो बल खाते खम्भों के ऊपर निर्मित अट्टालिकाओं पर धवल रंग की साड़ियाँ पहने चंद्रमा की श्वेत चाँदनी में अप्सरायें साज-सज्जा के साथ नृत्य कर रही हों। इस मंदिर की सौन्दर्यंता को देख दर्शनार्थी आश्चर्य चकित रह जाता है। मंदिर के मुख्य द्वार से प्रवेश पाते ही संगमरमर का कलात्मक ढंग से निर्मित छोटा सा जगमोहन है जिसकी दीवारें अद्‌भुत कलाकृति से सम्पन्न हैं, मध्य में गर्भ-मंदिर स्थित है, जिसमें श्री राधारमण देव विराजमान हं, इस मंदिर का एक भाग बसंती कमरा के नाम से प्रसिद्ध हैं इसमें अनेक रंगों के झाड़-फन्नूस एवं मुगल कालीन सौन्दर्य सज्जा की उपयुक्त सामग्री सजाई गई हैं, इस सौन्दर्य ता के मध्य बीच में एक स्वर्णका सिंहासन है, जिस पर ठाकुर विराजमान होता है,
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्रावण एवं माघ मास के विशेष दिनों में दर्शनों के लिये साल में चार बार यह कमरा खोला जाता है, वृन्दावन में आया दर्शनार्थी इस मंदिर के दर्शन कर धन्य हो जाता है, सेवा, पूजा एवं व्यवस्था इस मंदिर की अद्भुत है।

## श्री राधावल्लभ जी का मन्दिर

श्रीहितहरिवंशजी के उपास्य ठाकुर श्रीराधावल्लभजी हैं, ये उन्हें चड़थावल ग्राम के एक ब्राह्मण से प्राप्त हुये

थे। श्री राधावल्लभजी का मन्दिर भी अति प्राचीन है, राधावल्लभजी का नवीन मन्दिर १८७१ शक में बनकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पूर्ण हुआ। इस मन्दिर के निकट ही श्रीराधाबल्लभजी का प्राचीन मन्दिर है। श्रीराधावल्लभजी के साथ श्रीराधारानी की गद्दी सेवा है, इस मन्दिर की सेवा-पूजा एवं प्रबन्ध वहाँ के गोस्वामी समाज की देख-रेख में होता है। भोग राग की दृष्टि से इस मन्दिर की अच्छी व्यवस्था है, यहाँ हजारों दर्शनार्थी नित्य दर्शन हेतु आते हैं। यह ठाकुर अपनी श्रृंगारशैली के लिये प्रसिद्ध हैं। विग्रह भी अति सुन्दर है इस मन्दिर के प्रवेश द्वार से प्रवेश पाते ही भव्य विशाल जगमोहन है, सीढ़ियों पर ऊपर चढ़कर मध्य में गर्भ-मन्दिर स्थित है, ठाकुर के सामने यहां नियमित रूप से नित्य समाज सेवा होती है जिसमें वाणी के पदों का साज-सज्जा के साथ गान होता है, वृन्दावन के प्रमुख मंदिरों में इस मंदिर को गिना जाता है।

## श्री राधादामोदर जी का मन्दिर

श्री जीव गोस्वामी के उपास्य विग्रह इसी मंदिर में विराजमान हैं, यह मंदिर श्रृंगारवट के पास ही स्थित है इसी मंदिर में श्रीसनातन गोस्वामी द्वारा सेवित श्री गोवर्धन शिला भी विराजमान है, जिस पर भगवान के चरण-चिह्न अंकित हैं। इस शिला के दर्शन प्रत्येक जन्माष्टमी के दिन कराये जाते हैं, इस मंदिर के पीछे के भागपर श्रीसनातन गोस्वामीजी, श्रीजीवगोस्वामी एवं कृष्णदास कविराज की समाधियाँ भी बनी हुई हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## श्रीजी वाला मन्दिर

यह मन्दिर रेतिया बाजार से थोड़ा आगे चल कर बाँये हाथ की ओर स्थित है, इस मन्दिर का जीर्णोद्धार जयपुर की राजमाता श्रीआनन्दकुँवरि जी ने करवाया था, यहाँ पर ठाकुर श्री आनन्दमनोहर वृन्दावनचन्द्रजी के दर्शन हैं, श्याम वर्ण की बहुत ही सुन्दर विग्रह है, वामांग में श्रीराधारानी विराजमान हैं, इस मन्दिर का सुन्दर वृहद् प्रवेश द्वार है। उसमें से प्रवेश पाते पाते ही बहुत बड़ा भव्य आंगन है सामने ही गर्भ-मन्दिर स्थित है। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय से सम्बन्धित ग्रंथ सामग्रीका यह एकमात्र स्थान है इसी कारण इस मन्दिर का विशेष महत्व है, समय २ पर यहाँ बराबर कथा कीर्तन आदि होते रहते हैं। मन्दिर की व्यवस्था श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के अनुसार सञ्चालित होती है।

## जयपुर वाला मन्दिर

जयपुर महाराज श्री माधवसिंह जी ने अपने गुरु ब्रह्मचारी श्री गिरधारी शरणजी को प्रेरणा से सम्वत् १८९१ में इसका निर्माण करवाया था। वृन्दावन का यह बहुत ही विशाल मन्दिर है जिस का वृहद् प्रवेश द्वार है, पर्याप्त चलने के पश्चात मन्दिर का मुख्य द्वार है जिसके दोनों ओर वृहद् चबूतरे हैं,महरावदार भव्य द्वार है,जिसकी दीवारों पर बहुत ही आकर्षक तथा कलात्मक पत्थर तरासी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो रही है, भीतर वृहद् बाग है। फिर वृहद् आँगन, मध्य में गर्भ-मन्दिर स्थित है, जिसमें राधा-कृष्ण की सुन्दर मूर्ति विराजमान है, पत्थर का भव्य यह मन्दिर अपनी कलात्मक एवं भव्य विशालता के लिए प्रसिद्ध है।

## श्री मदनमोहन जी का मन्दिर

श्री सनातन गोस्वामी के सेवा ठाकुर मदनमोहन जी का मन्दिर मुल्तान के एक व्यापारी रामदास कपूर द्वारा
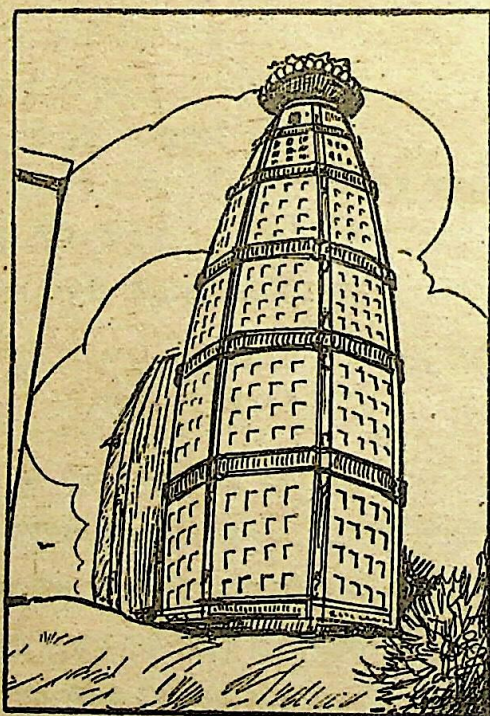
बनवाया गया था। वृन्दावन के प्राचीनतम मन्दिरों में श्री मदनमोहन जी के मन्दिर का नाम लिया जाता है। ऐसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि एक बार यह व्यापारी नाव द्वारा आगरा कुछ माल बेचने जा रहा था, उसी समय वृन्दावन में काली-दह के निकट, जहाँ गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गोस्वामी सनातनजी के आराध्यदेव श्रीमदनमोहनजी विराजमान थे, इस व्यापारी की नाव सहसा रुक गई, व्यापारी के काफी प्रयत्न करने पर भी जब नाव आगे न बढ़ी तब उसने समीप की कुटिया में रहने वाले इन्हीं बाबा से अपनी सारी व्यथा कह सुनाई। रामदास कपूर नें श्री मदनमोहनजी से प्रार्थना की तो नाव चल पड़ी। तभी उसने भी श्रीमदनमोहनजी महाराज के लिए इस सुन्दर मन्दिर का निर्माण करवाया। औरंगजेब के आतंक के भय से इस प्रतिमा को जयपुर भेज दिया गया, वहाँ से श्री करौली के महाराज श्री गोपालसिंह जी इस प्रतिमा को करौली ले आये और वहीं पर उनको प्रतिष्ठापित करा दिया। श्री मदनमोहन जी का प्रतिभू विग्रह सम्वत १८०५ में स्थापित किया गया जो लगभग सम्वत १८७७ में नन्दकुमार बसु द्वारा बनवाये गये नवीन मन्दिर में विराजित कर दिया गया, इस मन्दिर के अधि-कारी-गण गौड़िय सम्प्रदाय के आचार्य-गण ही हैं, वृन्दावन के प्रसिद्ध मन्दिरों में इस मन्दिर की भी गिनती की जाती है।

## श्रीकृष्ण-बलराम का मन्दिर (रमणरेती)

रमणरेती स्थित यह मन्दिर छटीकरा रोड पर वन-महाराज के कालिज के ठीक सामने सड़क पर ही है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मन्दिर में तीन विग्रह हैं--प्रथम दाईं ओर श्री गौर निताई, मध्य में श्री कृष्ण-बलराम, अन्त में श्री राधा-कृष्ण युगल ललिता विशाखा सहित हैं। इस मंदिर का उद्घाटन
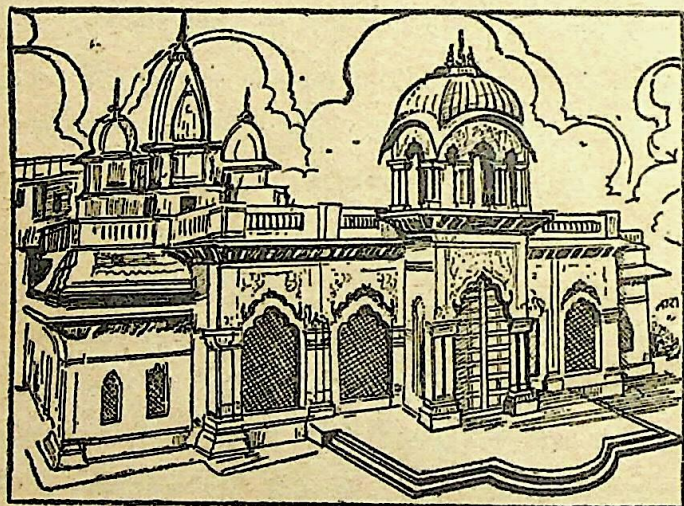
१९ अप्रैल १९७५ को विशाल शोभायात्रा के साथ हुआ। द्वार से प्रवेश करते ही फब्बारों की लाइन और प्रांगण में एक तमाल वृक्ष है। यह मंदिर श्री कृष्ण भावना संघ द्वारा निर्मित हुआ है। जिसने विदेश में भी अनेकों मंदिरों का निर्माण कराया है। इसके पीछे आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण लगभग ६० कमरों का अतिथि भवन है। यह सब प्रभुपाद श्री ए. सी. भक्ति वेदान्तने प्रचुर द्रव्य व्यय करके बनवाया है। यहाँ अनेकों अमरीकन भक्त वैष्णव धर्म में दीक्षित होकर निवास करते हैं। मन्दिर के व्यवस्थापकों ने विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु गुरुकुल की भी स्थापना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर दी है। अमेरिकी भक्त मन्दिर की पूजा, भोग, राग कीर्तन आदि में हर समय तल्लीन रहते हैं।

## श्रीनिधिवन

श्री वृन्दावन धाम के प्राकृतिक परिचायक श्री निधिवन सघन लताओं से घिरा हुआ अत्यन्त रमणीक स्थान है, रसिक शिरोमणि स्वामी हरिदास जी की यही साधना स्थली है। वृन्दावन की पवित्र भूमि सघन कुन्जों की छाँह, विभिन्न पक्षियों का कलरव, बानरों की उछल-कूद, इन्हीं सब प्राकृतिक सौन्दर्यता के मध्य स्वामी जी अपनी संगीत की साधना में डूब जाते थे। सभी जड़, चैतन्य, स्थावर, जंगम स्वामीजी की संगीत लहरी में डूब जाते थे। ऐसा कहा जाता है कि प्रसिद्ध गायक तानसेन के गान पर जब अकबर बादशाह मुग्ध हो गये थे तो गायक तानसेन बादशाह को अपने गुरू के पास इसी स्थान पर लाया था। स्वामीजी की सखी सम्प्रदाय की साधना में निधिवन को नित्य रख पहव माना जाता है, निधिवन में एक रंग महल भी बना हुआ है। जिसमें शय्या के दर्शन हाते हैं। श्रीबाँकेविहारीजी का प्राकट्य स्थान भी यहीं पर है, श्रीस्वामी जी की साधना फलस्वरूप भूगर्भ में से आप प्राप्त हुये थे। श्री बिहारी जी की विग्रह प्राप्त होने पर स्वामीजी बहुत चिन्तित हुए क्योंकि उनकी सेवा-पूजा हेतु वह अपनी रसमयी साधना को त्यागना नहीं चाहते थे बाद में श्रीस्वामिनीजू से अपनी इच्छानुसार सेवा-पूजा करने का अधिकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्राप्त हो गया। तब वह बड़े प्रसन्न हुए। निधिवन के मध्य में स्वामी हरिदासजी, बीठल विपुलजी, श्रीजगन्नाथ जी की समाधियों के दर्शन हैं, प्रत्येक वर्ष यहाँ पर विराट् संगीत सम्मेलन होता है, देश के कोने-कोने से महान संगीतकार स्वामीजी को संगीत के माध्यम से श्रद्धाञ्जलि देने के लिए आते हैं।

## श्री मीराबाई का मन्दिर

श्री शाहबिहारी जी के पास ही मीराबाई का दुर्लभ मन्दिर स्थित है। कृष्ण-विरह में आतुर मीराबाई का श्री जीव गोस्वामी से यहीं पर सम्पर्क हुआ था। मन्दिर में मीराबाई के समक्ष श्रीराधा-कृष्ण की मनोहर मूर्ति एवं विशाल शालिगराम विराजमान हैं। मन्दिर में मीराबाई से सम्बन्धित दुर्लभ पुस्तकें भी उपलब्ध हैं।

## विश्राम घाट (मथुरा)

यह प्रमुख घाट मथुरा नगरी के लगभग मध्यमें स्थित है इस घाट के उत्तर में १२ तथा दक्षिण में भी १२ घाट हैं। इस घाट पर यमुनाजी का मन्दिर तथा आस-पास अन्य मन्दिर भी हैं। सायंकाल यहाँ जो यमुनाजी की आरती होती है, उसका दृश्य मनोहारी होता है। ओरछा के राजा वीरसिंहदेव ने इसी घाट पर ८१ मन सोने का दान किया था। जयपुर, रीवाँ, काशी के राजाओं ने भी बाद में स्वर्ण दान किये थे। कहा जाता है कि श्रीयमुनाजी ने गोलोक से आकर और श्रीकृष्ण बलराम ने भी कंस का संहार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने के बाद यहीं विश्राम लिया था। श्री चैतन्य महाप्रभु जी ने भी यहाँ विश्राम किया था। चैत सुदी ६ को श्री यमुनाजो का जन्मोत्सव होता है तथा यमद्वितीया के दिन लाखों यात्री दूर-दूर से आकर स्नान करते हैं। कहा जाता है कि अपने भाई यम से श्री यमुना महारानी ने इसी दिन तिलक करके वरदान लिया था कि जो भाई बहिन इसदिन यहाँ स्नान करेंगें, वे यमलोक गमन नहीं करेंगे।

3941

## श्री द्वारिकाधीश जी का मन्दिर

मथुरा का यह सबसे प्राचीन मन्दिर है और प्रमुख बाजार असकुण्डा बाजार (जिसे अब राजाधिराज मार्ग भी कहते हैं) में स्थित है। ग्वालियर राज्य के खजांची सेठ गोकुलदास जी पारिख दारा यह सन् १८१४-१५ में निर्मित हुआ था। इसकी सेवा-पूजा कांकरोली के पुष्टि-मार्गीय गोसांइयों द्वारा होती है। प्रसाद मन्दिर में ही शुद्ध रीति से तैयार होता है। सावन के दिनों में झूलों का तथा भादों में जन्माष्टमी का महोत्सव बड़ी धूमधाम से होता है। श्री द्वारिकानाथजी की एक दिन में आठ झाँकियाँ होती हैं। चार बार सुबह और चार बार दोपहर बाद दर्शन होते हैं। सबसे पहली झाँकी 'मंगला' की बहुत सबेरे दिन निकलते होती है। अन्त में दिन छिपने से पूर्व हीं शयन की आरती होकर पट बन्द हो जाते हैं।

## बिड़ला मन्दिर

यह मथुरा शहर से बाहर मथुरा, वृन्दावन की सड़क

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बिड़ला द्वारा बनवाया गया है। मन्दिर में पाञ्चजन्य शंख एवं सुदर्शनचक्र लिए हुए श्री कृष्ण भगवान सीताराम एवं लक्ष्मीनारायण जी की मूर्तियाँ बड़ी मनोहारी हैं। दीवालों पर चित्र एवं उपदेशों की रचना दर्शकों का मन मोह लेते हैं। एक स्तम्भ पर सम्पूर्ण गीता लिखी हुई तथा स्थान-स्थान पर मूर्तियों आदि से सुसज्जित मन्दिर यात्री को भक्ति-रस विभोर कर देता है। समीप ही गीता-मन्दिर धर्मशाला भी है।

## श्रीकृष्ण जन्म भूमि

### ( कटरा केशवदेव )

सभी प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा यह प्रमाणित हो गया है कि कटरा देशवदेव राजा कंस का भवन रहा था एवं भगवान श्रीकृष्ण का जन्म यहीं हुआ था। यहीं प्राचीन मथुरा बसी हुई थी। इससे पूर्व मधु नाम के राजा ने जो मधुपुरी बसाई थी, वह आज के महोली स्थान पर थी। यहाँ पर समय-समय पर अनेक बार भव्य मन्दिर का निर्माण होता रहा जिन्हें हर बार विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट किया जाता रहा। अन्त में सन् १६६९ में औरंगजेब ने इस प्राचीन इमारत को तोड़ कर उसी के मलबे से ईदगाह मसजिद का निर्माण कराया जो आज भी विद्यमान है। ब्रिटिश शासन काल में ही यह समस्त स्थान बनारस के राजा पटनीमल ने खरीद लिया ताकि यहाँ फिर से श्रीकृष्ण मन्दिर का निर्माण हो सके। महामना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० मदनमोहन जी मालवीय, श्री जे० के० बिड़ला के प्रयत्नों से श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट का निर्माण हुआ जिसने अब यहाँ एक विशाल मन्दिर का निर्माण कराया है। यहाँ आयुर्वेदिक औषधालय, पाठशाला, पुस्तकालय और यात्रियों के ठहरने के लिये ४०-४५ कमरों का अतिथि-गृह का निर्माण हो चुका है। लगभग दो करोड़ रु० की लागतसे श्रीमद्भागवत् भवन का विशाल निर्माण कार्य चालू है। देश-विदेश से प्रतिदिन हजारों यात्री दर्शनार्थ आते हैं। समीप ही प्राचीन पोतरा कुण्ड एवं अन्य प्राचीन मन्दिर भी है। हस्तकला एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं के स्टोरों के अलावा कई होटल एवं रेस्टोरेण्ट शाकाहारी भोजनालय भी है।

जन्माष्टमी के दिनों में यहां बड़ा भारी मेला लगता है। श्रीकृष्ण लीला एवं रासलीलाएं कई दिनों तक होती हैं। लाखों यात्री देश के कोने-कोने से भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिन को मनाने यहाँ आते हैं। क्वार के महीने में यहाँ के रंगमंच पर ही श्री रामलीला भी होती है। यहाँ खुदाई के समय जो प्राचीन अवशेष मिले थे, वे सभी यहाँ के राजकीय संग्रहालय मथुरा में सुरक्षित हैं। ट्रस्ट द्वारा 'श्रीकृष्ण सन्देश' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाता है।

## तीनों वन की प्रसिद्ध परिक्रमा

मथुरा, गरुड़ गोविन्द और वृन्दावन की परिक्रमा तीनों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन की परिक्रमा कहलाती है। यह परिक्रमा अक्षय नवमी एवं देवोत्थानी एकादशी को लगती है। इस परिक्रमा का मार्ग सरस्वती कुण्ड से बदल जाता है। मथुरा की परिक्रमा सरस्वती कुण्ड से मथुरा दिल्ली रोड पर छटीकरा तक जाती है और वहाँ से गरुड़गोविन्द की सड़क पर होकर सीधी मन्दिर पर पहुँचती है।

गरुड़ गोविन्द में भगवान विष्णु का मन्दिर है। पास ही एक विशाल कुण्ड है। यहाँ से परिक्रमा कच्चे रास्ते के द्वारा वृन्दावन के लिए प्रस्थान करती है और गोपालगढ़ पर वह छटीकरा वृन्दावन रोड पर होती हुई रमण रेती पहुँचती है। रमण रेती से यमुना के घाटों पर होती हुई श्री मदन मोहन जी के मन्दिर के पास से श्री बाँकेविहारी के मन्दिर तक पहुँचती है और फिर शाह बिहारीलाल के मन्दिर के पास से फिर यमुना किनारे-किनारे चलती है। वृन्दावन से मथुरा तक का मार्ग यमुना किनारे होकर ही है। मुख्य दर्शनीय स्थल ज्ञान गुदड़ी, केशी घाट, टट्टी स्थान, भतरोंड, अक्रूर मन्दिर, गीता मन्दिर हैं। यह परिक्रमा लगभग सत्ताईस मील लम्बी कही जाती है। बालक बूढ़े और स्त्रियाँ भी इतने लम्बे मार्ग को सहज ही पार कर लेते हैं।

## काँच का मन्दिर

यह मन्दिर काँच की कला का अभूत पूर्व नमूना है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसका निर्माण सन् १९४० में भक्त लोगों के द्वारा मिलकर कराया गया। यहाँ भगवान के दो रूप में दर्शन होते हैं, प्रथम में रासलीला रूप तथा दूसरे में चाँदी के पालने में सोये हुए हैं। इस मन्दिर में पालना झुलाने का माहात्म्य है।

## वृन्दावन की कुन्जें :—

श्रीजी कुन्ज—यह निम्बार्क सम्प्रदायाचार्यों की प्रमुख बैठक है।
वर्द्धमान वाली कुन्ज—इसके अन्दर राधाकृष्ण विग्रह है।
हाड़ा वाली कुन्ज—यहाँ श्री गोविन्ददेव जी विराजमान हैं।

## वृन्दावन के उपवन :—

सेवा कुन्ज—इसके अन्दर चित्रपट के दर्शन हैं। ललिता कुण्ड, श्याम कुण्ड, तमाल दर्शनीय चिह्न हैं। यहाँ रात्रि में रहना वर्जित है।

निधिवन—यह स्वामी हरिदास जी का समाधि-स्थल है।
किशोर वन—यह स्वामी हरिराम व्यास जी की साधना स्थली है।
बिहार वन—यह स्वामी हरिदास जी की भजन स्थली है।
झूलन वन—बिहार वन के पास ही स्थित है।
गह्वर वन—झूलन वन के पास [पानीघाट] है।
कालिया वन—कालीदह के पास है।
गोपाल वन—कालीदह के आगे है।
गो चरण वन—गौतम मुनि का आश्रम है।
विहार वन—राधा कूप के पास है।
अटलवन—चुंगी चौकी के पास हैं।
पपड़ वन—पानीघाट के पास है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## वृन्दावन के प्रसिद्ध कुण्ड व कूप :—

ब्रह्मकुण्ड—इसी के ऊपर ब्रह्माजी ने तपस्या की थी।

दावानल कुण्ड—भगवान ने यहाँ दावाग्नि-पान किया था।

गोविन्द कुण्ड—श्रीकृष्ण ने यहाँ गऊ चराकर विश्राम किया था।

वेणु कुण्ड—महारास गे समय राधाजी की प्यास शान्त करने को श्रीकृष्ण ने रचा था।

ललिता कुण्ड—यह सेवा-कुञ्ज में स्थित है।

विशाखा कुण्ड—ललिता अवतार श्री हरिदास ने विशाखा का इस सरोवर के रूप में यहाँ प्रकट किया था।

विश्राम कुण्ड—दावानल के पश्चात भगवान ने यहाँ विश्राम किया।

मोती झील—इसका निर्माण स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती ने कराया।

## वृन्दावन के प्रमुख घाट :—

महन्तघाट, रामगोपालघाट, कालीदहघाट, गोपालघाट, नाभाघाट, सूर्यघाट, प्रस्कन्दनघाट, कडियाघाट, जुगलघाट, धूसरघाट नयाघाट, श्रीजीघाट, विहारघाट, धारापरघाट, नागरीदासघाट अन्धेरघाट, इमलीतल्लाघाट, वर्द्धमानघाट, या रानापतघाट, आचार्य-घाट, हनुमानघाट, पांडाघाट, केशीघाट, वंशीवटघाट, टिकारीघाट जगन्नाथघाट, मालाधारी पानीघाट ( पनघट ), श्यामघाट, गौघाट दानघाट, गोपालघाट, चीरघाट।

## वृन्दावन के प्रमुख घाट :—

आनन्दमयी आश्रम, आनन्द वृन्दावन आश्रम, उड़ीयाबाबा आश्रम, कलाधारी आश्रम, मानव सेवासंघ आश्रम, साधुमाई आश्रम भारत सेवाश्रम संघ, परमहंस आश्रम, काठीया आश्रम, दंडी आश्रम हिताश्रम, ब्रह्मनिवास आश्रम, श्रीकृष्ण भक्ति आश्रम, शांति आश्रम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कृष्ण बलराम आश्रम, दावानल कुण्ड आश्रम, अनुपयति आश्रम, श्रोतमुनि आश्रम, रघुनाथाचार्य आश्रम, निम्बार्काश्रम,श्रीजी की बड़ी कुञ्ज, भागवत निवास, भजनाश्रम, सुदामाकुटी आश्रम, गोदानिवास आश्रम, खटलाबाबा आश्रम, नया काठीया आश्रम, नरहरिदास आश्रम, माँ श्यामा आश्रम, अलीमाधुरी आश्रम, चार सम्प्रदाय आश्रम, फोगला आश्रम ।

## वृन्दावन के वट :—

तिथी........
पु०सं०........
3041
पाणिनि-कन्या पुस्तकालय

बंशीवट, अद्वैत वट, श्रृंगारवट ।

## वृन्दावन की धर्मशालायें :—

श्रीवृन्दावनधाम में यात्रियों को ठहरने के लिए धर्मप्राण भक्तों ने धर्मशालायें स्थापित की हैं । जहाँ पर यात्री ठहरते हैं । वृन्दावनमें बहुत सी धर्मशालायें हैं जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं—

मनोरमा बाई गोयन्का गैस्ट हाऊस, सेठ प्रेमसुखदास भगत भवन, मोदी भवन एवं मुलतानियाँ भवन, मिर्जापुर धर्मशाला, मिच-नावाद वाली धर्मशाला या दाऊजी पंडा की धर्मशाला एवं सिरसा वाली की धर्मशाला,रघुआश्रम, भिवानी वाली धर्मशाला, पूना वाली धर्मशाला, अध्यात्मवाद वाली गुजराती धर्मशाला, भोजनगर वाली धर्मशाला, मैदावाली धर्मशाला, माहेश्वरी कुञ्ज,सूरजमल जैनारायण धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, नारायणदास बनारसीदास धर्मशाला, बसन्तीबाई धर्मशाला, हाथरस वाली धर्मशाला, महादेव सर्राफ की धर्मशाला, सक्कर सिंधी धर्मशाला, कोठारी धर्मशाला, जिन्दवाली धर्मशाला, अमृतसर वालों की धर्मशाला, बन्नू वाली धर्मशाला, गुजराजी धर्मशाला, बैजनाथ केड़िया देवीसहाय भिवानी वाले की धर्मशाला, रतनलाल वाली धर्मशाला, अकोला वाली धर्मशाला, जय-पुरिया धर्मशाला, जीवनबल्लभ धर्मशाला, कानपुरवाली धर्मशाला लद्दारामवाली धर्मशाला, रंगवालोंकी धर्मशाला, पंजाबी रामनगरी,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तैंगा वाली धर्मशाला, घमण्डीलाल की धर्मशाला, सामनमल खत्रीकी धर्मशाला, हरीराम सिन्धी की धर्मशाला, जम्मू वालों की धर्मशाला जिनेड़ी वाली धर्मशाला, दम्माणी धर्मशाला आदि ।

## प्रमुख अतिथि गृह :—

डाक बंगला— नगरपालिका द्वारा निर्मित ।
सेवाश्रम— भारत सेवा संघ द्वारा स्थापित ।
जयपुरिया अतिथि गृह— मंगतूराम जयपुरिया द्वारा निर्मित ।
मोदी भवन— गूजरमल मोदी द्वारा निर्मित

## मथुरा की धर्मशालायें :—

मथुरा पुरी के अन्दर यात्रियों को ठहरने के लिए धर्मप्राण भक्तगणों ने धर्मशालायें स्थापित की हैं। जहाँ पर यात्री ठहरते हैं। मथुरा पुरी के अन्दर बहुत सी धर्मशालायें हैं। जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं :—

धर्मशाला गरीबदास, डाँगा वाली धर्मशाला, अहमदाबाद वाली धर्मशाला, गुजराती धर्मशाला, शेरगढ़वाली धर्मशाला, करमसीदासजी की धर्मशाला, हाथरस वालों की धर्मशाला, कलकत्ता वालों की धर्मशाला, हीरालाल धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला तिलक द्वार अग्रवाल धर्मशाला गली कुशक, गंगोलीमल गजानंद धर्मशाला; कानपुर वाली धर्मशाला, माहेश्वरी धर्मशाला, छीपी वाली धर्मशाला, नारायणदास धर्मशाला, बिड़लामन्दिर धर्मशाला, अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह, चित्रगुप्त धर्मशाला, भिवानी वालों की धर्मशाला, मोरवी वालों की धर्मशाला, आगरे वालों की धर्मशाला, तेजपाल गोकुलदास की धर्मशाला, सिन्धी धर्मशाला, गिरधर मुरारी धर्मशाला, बम्बई वालों की धर्मशाला; दामोदर भवन. छत्ता बाजार मथुरा आदि ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.